International Research Vision (Int. Res. Vn.)
ISSN: 2454-3721
Volume 6 Issue 1: 17-19, 2020
Available online http://www.bioglobia.in

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में आतंकवादी संगठन

गुंजन कुमारी
अतिथि शिक्षक, राजनीतिशास्त्र विभाग, के. एस. कॉलेज, लहेरियासराय,
जिला– दरभंगा – 846004, बिहार
Author's e-mail: dr.gunjan.dang81@gmail.com

Received: 01.10.2019 **Revised: 25.10.2019** **Accepted:10.12.2019**

सारांश

आतंकवाद से जुड़े विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को समझाना आतंकवाद को समझने के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। इस दृष्टि से कुछ संगठनों का परिचय आतंकवाद से जुड़े समूहो के आधारों और गतिविधियों को स्पष्ट करते हैं। प्रस्तुत आलेख इन संगठनों के धार्मिक स्वरूप और विभिन्न देशों के युवा समूहों का इससे जुड़ाव एवं इसके कारणों का संक्षिप्त विश्लेषण है।

शोध बिंदू: *आतंकवाद, अंतर्राष्ट्रीय संगठन, धार्मिक स्वरूप, अंसतोष।*

शीर्षक विश्लेषण

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद एक महत्वपूर्ण और अमानवीय कृत्य है। इसमें जेहाद यानी धर्मयुद्ध के नाम पर लोगों को दूसरे धर्मो, संस्कृतियों व मान्यताओं के विरुद्ध भड़काना व हिंसा के लिए तैयार किया जाना है। जेहाद का मुख्य लक्ष्य विश्व भर में इस्लामी व्यवस्था स्थापित करना है। इसके लिए किशोरावस्था के युवकों को ही भर्त्ती किया जाता है और उन्हें वैचारिक व धार्मिक प्रशिक्षण दिया जाता है और जब वे इस्लाम की विचारधारा में पक्के हो जाते हैं तो उन्हें आतंकवादी कार्यविधि और शस्त्रस्तों के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह विचारधारा राष्ट्रवाद के भौगोलिक आधारों को स्वीकार नहीं करती। वह अन्य धर्मो को इस्लाम के साथ बराबरी का दर्जा न तो देने को तैयार रहती है और नही उसके अस्तित्व को स्वीकार ही करती है। इन्हीं आधारों पर अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का विस्तार होता जा रहा है जो कि मानवता के लिए खतरे की घंटी है।

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और संगठन

आतंकवाद से जुड़े अंतर्राष्ट्रीय संगठन की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही चली जा रही है, परंतु प्रस्तुत आलेख में कुछ प्रमुख संगठनों पर प्रकाश डाला गया है। ये संगठन हैः–

(1) इस्लामिक ग्रुप (आई जी) (2) हिजबुल्लाह (3) आर्म्ड इस्लामिक संगठन (जी0आईए0) (4) हमास या इस्लामिक रेसिस्टेंस मूवमेंट (5) अल–जिहाद (6) डोमेस्टिक फ्रंट फॉर लिबरेशन ऑफ फिलीस्तीन (7) बास्वा फादर लैंड लिबर्टी (8) चुकाकुंदा (9) द फिलीस्तीन इस्लामिक जेहाद (पी0आईजे0) (10) अबु सयाफ ग्रुप (ए0एफ0जी0) और (11) अयूम सुप्रीम टूथ (अयूम शिनरिकयो)।

(1) इस्लामिक ग्रुप (आई जी): इसका पूरा नाम अलगामात अल इस्लामिया है यह कट्टरपंथियो का इजिप्टियन ग्रुप है जो 1970 के उत्तर्राद्ध में अस्तित्व में आया जिसका सर्वमान्य आध्यात्मिक गुरू शेख उमर अब्दुल्ला रहमान है। इस संगठन का मुख्य लक्ष्य होस्नी मुबारक सकरार को मिश्र की सत्ता से हटाकर इस्लामिक संगठन से संबंधित किसी इस्लामिक सरकार की स्थापना करना है। इसकी गतिविधियाँ गरीब, बेरोजगार और पढ़े–लिखे लोगों को अपने संगठन से जोड़कर उनसे कार्य करवाना है।[1]

(2) हिजबुल्लाह : इसके कई नाम है जैसे पार्टी ऑफ गॉड, इस्लामिक जेहाद, रिवोल्यूशनरी ऑफ फिलीस्तीन। इस संगठन की स्थापना लेबनान के शिया मुसलमानों ने की है। यह संगठन लेबनान में ईरान की तरह एक इस्लामिक गणतंत्र स्थापित करना चाहता है और यह यूरोप, दक्षिणी अफ्रीका और

उत्तरी अमेरिका तक फैला हुआ है।

(3) आर्म्ड इस्लामिक संगठन (जी0आईए0) : यह संगठन अल्जीरिया में सक्रिय है जो अल्जीरिया में स्थापित धर्मनिरपेक्ष सरकार के स्थान पर इस्लामिक राज्य की स्थापना करना चाहता है। इस संगठन को अल्जीरिया से बाहर जाकर बसे मुस्लिमों से सहायता प्राप्त होती है।

(4) हमास या इस्लामिक रेसिस्टेंस मूवमेंटः इसकी स्थापना 1987 में मुस्लिम–ब्रदर हुड की फिलीस्तीनी ब्रांच के धीरे–धीरे बढ़कर काफी शक्तिशाली हो जाने के कारण हुई थी। बस संगठन ने अपनी इजराइल विरोधी नीति और उसकी धरती पर इस्लामिक फिलीस्तीनी राज्य की स्थापना की। इसके सदस्य मस्जिदों और समाजसेवी संगठनों के साथ कर कर सदस्यों की भर्त्ती, चंदा एकत्रित करना, गतिविधियों का संचालन करना और अन्य लोगों को अपने संगठन से जोड़ने के लिए नई–नई योजनाएँ बनाने का काम करते हैं। इस संगठन को अपनी गतिविधियों को संचालित करने के लिए फिलीस्तीन छोड़कर बाहर जा बसे प्रवासियों के अलावा ईरान व सऊदी अरब के कुछ अरबपतियों से मदद प्राप्त होती है।

(5) अल–जिहादः यह 1970 से सक्रिय मिश्र का उग्रवाद संगठन है। इस संगठन के कई नाम है जैसे जिहाद ग्रुप, वेनगार्डस ऑफ कान्कवेस्ट, तालाह जिहाद ग्रुप अल फतेह, इंटरनेशनल जस्टिस ग्रुप, वर्ल्ड जस्टिस ग्रुप आदि। इसने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मिश्र सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों पर हमला करके खत्म कर दिया है।[2]

(6) डोमेस्टिक फ्रंट फॉर लिबरेशन ऑफ फिलीस्तीनः यह एक मार्क्सवादी संगठन है जिसका जन्म 1969 में PFLP से अलग होने पर हुआ। 1991 में यह दो हिस्सों में विभाजित हो गया था– एक अराफात समर्थक और दूसरा कट्टरपंथी नईफ हवतमाह समर्थक। यह इजराईल और PLO के बीच शांति समझौता के सख्त खिलाफ है। इसकी गतिविधियों का क्षेत्र सीरिया लेबनान और इजराइल अधिकृत क्षेत्र है। इसे सीरिया व लीबिया से आर्थिक और आधुनिक हथियारों की मदद मिलती है।

(7) बास्वा फादर लैंड लिबर्टी : यह संगठन मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है और इसी आधार पर 1959 में स्थापना हुई थी। इसका लक्ष्य स्पेन के वास्वा क्षेत्र को स्वतंत्र राज्य का दर्जा प्रदान करवाना है। यह संगठन अपहरण, फिरौती, डकैती व सुपारी लेकर कत्ल करने जैसे काम कर अपने संगठन के लिए धन एकत्रित करता है। यह मुख्यतः उत्तरी स्पेन में स्थित बास्वा क्षेत्र और दक्षिण–पश्चिम फ्रॉस में अपनी गतिविधियों का संचालन करता है।

(8) चुकाकुंदाः यह जापान का सबसे अधिक शक्तिशाली संगठन है जिसका जन्म 1957 में जापानी कम्यूनिस्ट पार्टी के विभाजन के फलस्वरूप हुआ है। यह संगठन आंदोलन करने के अलावा रॉकेटो और आग्नेय अस्त्रों के द्वारा हमला कर अपना वर्चस्व कायम करने की कोशिश में लगा रहता है।[3]

(9) द फिलीस्तीन इस्लामिक जेहाद (PIJ): वर्ष 1970 में गाजापट्टी में फिलीस्तीनी आतंकवादियों द्वारा गठित यह संगठन कई छोटे–छोटे आतंकवादी गुटों का एक समुदाय है। यह संगठन एक इस्लामिक फिलीस्तीन राज्य की स्थापना और पवित्र युद्ध के जरिए इजराइल को खत्म करने के लिए अपने अभियान के तहत पूरी सक्रियता के साथ कार्यशील है।

(10) अबु सयाफ ग्रुप (AFG): इसकी स्थापना 1991 में मोरो लिबरेशन फ्रंट से अलग होने के बाद हुई। यह इस्लामिक ग्रुप अब्दुर्रज्जाक अबूबकर जाजलानी के नेतृत्व में दक्षिण फिलीपीन्स में कार्यरत है। यह संगठन भी धन एकत्रित करने के लिए अपहरण, फिरौती वसूली, व्यापारियों और कंपनियों से पैसा वसूली आदि करता है। इसके अलावा इसे इस्लामिक कट्टरपंथी संगठनों द्वारा भी सहायता प्राप्त होती है।

(11) अयूम सुप्रीम टूथ (अयूम शिनरिकयो): यह संगठन शोको असहारा द्वारा 1987 में बना जिसका उद्देश्य

पहले जापान और बाद में सारी दुनिया पर राज करना है। 1989 में जापानी नियम के तहत इसे धार्मिक संगठन घोषित किये जाने के बाद 1990 में हुए चुनाव में भी भाग लिया था जिसकी बाद में सरकार ने मान्यता रद्द कर दी। जापान के अलावा यह आस्ट्रेलिया, रूस, यूक्रेन, जर्मनी, ताईवान, श्रीलंका, पूर्वी यूगोस्लाविका और अमेरिका तक फैला हुआ है।

इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में आतंकवादी समूह लगातार बनते रहते है और इसकी सूची बदलती रहती है। यही नहीं, इसके हिंसात्मक रूप भी बदलते रहे हैं।[4–8]

निष्कर्ष

यह समझने की जरूरत है कि आतंकवाद के लिए जिम्मेदार लोग अमानवीय है, पाश्विक हैं, निर्मम है इसीलिए उनके साथ कोई उदारता नही बरतनी चाहिए। इस पर लगभग हर व्यक्ति की सहमति होगी जिसने आतंकवाद का सामना किया है या उसके खौफ में जी रहा है। इस मानसिकता के लोग मानवाधिकार या कानून की प्रक्रिया को आतंकवाद खत्म करने के रास्ता में रोड़ा मानते हैं। इसका एकमात्र हल उससे आगे बढ़कर उसी की भाषा में जबाब देना होगा जैसा कि अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन के साथ किया और भारत ने वर्ष 2019 में एयर सर्जिकल स्ट्राईक के जरिए किया। विश्व में सभी आतंकवाद से जूझ रहे दशों को एकमत से बिना किसी भेदभाव के आतंकवादियों के ठिकानो को चिन्हित कर उन्हें नेस्तनाबूद करना प्राथमिकता होनी चाहिए। साथ ही उनके सरगनाओं को मारने के लिए फुलप्रूफ प्लान देश या विदश के नागरिकों को चिन्हित उन्हें मार गिराना ही इसकी जड़ को खत्म करने की नियति होनी चाहिए।

संदर्भ सूची

1. वरिष्ट संपादकः ''सामाजिक मुद्दे'' सिविल सर्विसेज क्रानिकल प्रकाशन, नई दिल्ली अंक दिसंबर 2010 पृष्ठ 92.
2. स्वाददाता 'नेपाली माओवादियों ने बजा दी खतरे की घंटी' अमर उजाला, नैनीताल 14 नवंबर 2005 पृष्ठ 13.
3. गोविन्दाचार्य के एन। 'आतंकी नही है नक्सली' सम्पादकीय, दैनिक जागरण संस्करण नैनीताल, 20 अप्रैल, 2010.
4. हिमांशु कुमार। 'बन्दूक के साये में शांति का पाखंड' समयान्तर अंक नवंबर 2009, पृष्ठ 16.
5. रजनीश 'सही विकल्प की खोज' योजना। सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली। अंक फरवरी, 2007, पृष्ठ 18.
6. दीनानाथ मिश्र। 'इस्लाम, मुसलमान और आतंकवाद'। दैनिक जागरण, बरेली। 28 सितंबर 2001, पृष्ठ 10.
7. खंडेला, मानचंद। 'अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद' संस्करण 2002, आविष्कार पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, पृष्ठ 93.
8. शुक्ल, कृष्णानंद। 'लादेन तो गया लेकिन आतंकवाद नही'। तूणीर अंक – 14, रक्षा अध्ययन शोध समिति का वार्षिक प्रकाशन, गोरखपुर, पृष्ठ 8.